डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

ख़बरों में विश्वविद्यालय

अक्टूबर 2022

डॉ. आंबेडकर और डॉ. गौर के साझा सपने की परिणति है उत्कृष्टता केंद्रः कुलपति

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में डॉ. आंबेडकर उत्कृष्टता केंद्र का विधिवत शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध इतिहासविद एवं उत्तर प्रदेश विधानसभा सदस्य प्रो. श्याम बिहारी लाल, विशिष्ट अतिथि के रूप में बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज के डीन प्रो. आरएस. वर्मा उपस्थित थे। अतिथियों का परिचय प्रो. चंदा बेन ने कराया। कार्यक्रम का अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विवि में स्थापित डॉ. आंबेडकर उत्कृष्टता केंद्र डॉ. गौर और डॉ. अम्बेडकर के साझा सपने की परिणति है। उन्होंने कहा कि डॉ. आंबेडकर ने ज्ञान की ज्योति जलाई थी और हमें उसी ज्योति के प्रकाश से समाज को लाभान्वित करना है।

मुख्य अतिथि प्रो. श्याम बिहारी लाल ने कहा कि एक महानदानी और विद्वान डॉ. गौर के द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय में डॉ. आंबेडकर जैसे महापुरुष के नाम पर स्थापित यह केंद्र न्याय और समता के आदर्शों को समाज में फैलाने का कार्य करेगा। दोनों ही महापुरुष समाज के वंचित वर्गों के उत्थान के लिए कई क्षेत्रों में कार्य किया। विशिष्ट अतिथि डॉ. आरएस वर्मा ने कहा कि उन्होंने विषम परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए अपने अध्ययन को जारी रखा और कई उपलब्धियां हासिल कीं। देश विदेश में उन्हें 'सिंबल ऑफ नॉलेज कहा जाता है। कार्यक्रम में केंद्र द्वारा आयोजित की गई वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को अतिथियों ने स्मृति चिह्न और प्रमाण प्रत्रप्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शालिनी चोइथरानी ने किया और आभार डॉ. सतीश सी ने माना।

विश्वविद्यालय में चलाया सफाई अभियान

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। महात्मा गांधी की 153वीं जयंती डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में मनाई गई। केंद्रीय पुस्तकालय में बापू के चित्र पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने माल्यार्पण किया। इसके उपरांत उन्होंने महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला। वहीं एनएसएस के स्वयंसेवकों के साथ विश्वविद्यालय परिसर में सफाई अभियान की भी शुरुआत की गई। दोपहर के सत्र में बापू ने कहा था विषय पर आनलाइन राष्ट्रीय व्याख्यान आयोजित किया गया।

मुख्य वक्तव्य प्रो. सुदर्शन अयंगर, प्रख्यात गांधीवादी एवं पूर्व कुलपति गुजरात विद्यापीठ ने दिया। अध्यक्षता विवि की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने की। इसमें विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में दर्शनशास्त्री एवं विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अंबिकादत्त शर्मा ने वक्ता परिचय देते हुए कहा कि बापू ने जो कहा था उसे सुनना और गुनना अपनी ऐतिहासिक भूलों को सुधारना है। प्रो. सुदर्शन अयंगर ने कहा कि बापू ने जो कहा था वो हम सबकी अंतरात्मा में गूंजता है। चूंकि जीवन जीने के लिए चरित्र बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए बापू ने विद्यार्थी अवस्था के लिए चरित्र बनाने की बात कही। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज पूरे देश में जो मेड इन इंडिया या स्वदेशी की बात हो रही है। उसका संदेश बापू बहुत पहले हम सबको से चुके थे। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम इस पर विचार करें कि अब तक हम बापू के इस विचार को क्रियान्वित क्यों नहीं कर पाए? कार्यक्रम के अंत में कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने आभार माना। संचालन डा. आफरीन खान ने किया।

सफाई अभियान के दौरान सफाई करतीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

मेड इन इंडिया का संदेश बापू हमें बहुत पहले दे चुके थे: कुलपति

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

विवि परिसर में झाड़ू लगातीं कुलपति व अन्य कर्मचारी।

सागर. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 153 वीं जन्म जयंती के अवसर पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। उन्होंने महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला। इसके बाद एनएसएस के स्वयंसेवकों के साथ विश्वविद्यालय परिसर में सफाई अभियान की भी शुरुआत की।

सत्र में 'बापू ने कहा था' विषय पर ऑनलाइन राष्ट्रीय व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्तव्य *प्रो. सुदर्शन अयंगर, प्रख्यात गांधीवादी एवं पूर्व कुलपति गुजरात विद्यापीठ ने दिया और अध्यक्षता* विवि की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने की। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रो. अंबिकादत्त शर्मा ने कहा कि बापू ने जो कहा था उसे सुनना और गुनना अपनी ऐतिहासिक भूलों को सुधारना है। प्रो. सुदर्शन अयंगर ने बताया कि बापू ने जो कहा था वो हम सबकी अंतरात्मा में गूंजता है। चूंकि जीवन जीने के लिए चरित्र बहुत महत्वपूर्ण है इसलिए बापू ने विद्यार्थी अवस्था के लिए चरित्र बनाने की बात कही। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि आज पूरे देश में जो मेड इन इंडिया या स्वदेशी की बात हो रही है उसका संदेश बापू बहुत पहले हम सबको से चुके थे। *अब आवश्यकता इस बात की है कि हम इस पर विचार करें कि अब तक हम बापू के इस विचार को क्रियान्वित क्यों नहीं कर* पाएगांव और शहर के संदर्भ में गांधी के विचारों का हवाला देते हुए प्रो गुप्ता ने कहा कि गांधी जी गांव और शहर के मध्य फर्क किए जाने के बजाय इस बात पर जोर देते थे कि हम सब एक हैं।

भारतीय छात्र संसद में डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के चार विद्यार्थी चयनित

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के चार विद्यार्थियों का भारतीय छात्र संसद में चयन हुआ है। चयनित विद्यार्थियों से कुलपति ने मुलाकात कर उनका उत्साह बढ़ाया।

जानकारी के अनुसार विवि की छात्रा खुशी सलूजा (संकाय प्रतिनिधि), अनिकेत सिंह ठाकुर (मेंबर एकेडमिक काउंसिल विश्वविद्यालय), प्रताप राज तिवारी, मनोज दांगी को केंद्रीय युवा मंत्रालय एवं एमआइटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी द्वारा 15 से 17 सितंबर तक पुणे में आयोजित भारतीय छात्र संसद में दो चरणों के चयन के बाद विवि का प्रतिनिधित्व करेंगे। सांस्कृतिक परिषद की ओर से छात्र दल के संयोजक के रूप में शोधार्थी दिनेश तोमर को भेजा गया था। विधि विभाग के छात्र प्रताप राज तिवारी ने मध्यप्रदेश का राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया।

चयनित विद्यार्थियों से कुलपति ने मुलाकात कर उनका उत्साह बढ़ाया। ● नवदुनिया

आप सभी विवि का नाम रोशन करते रहेंगे : विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए उन्हें विष्य में इसी तरह आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

उन्होंने कहा कि मेरा विश्वास है कि हमारे विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं इसी तरह अपनी ऊर्जा और लगन से अपने परिवार और अपने विश्वविद्यालय का नाम रोशन करते रहेंगे। इस तरह की गतिविधियों में छात्र-छात्राओं की भागीदारी के लिए विवि हर संभव सहयोग करेगा। इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अंबिका दत्त शर्मा, अकादमिक अफेयर्स के निदेशक प्रो. नवीन कांगो एवं सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डा. राकेश सोनी ने भी छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

विवि की शोध छात्रा ज्योति भारद्वाज और डॉ. अरविंद सिंह को मिला यंग एक्सीलेंस अवार्ड

सागर | डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजशास्त्र विभाग की शोधार्थी ज्योति भारद्वाज को यंग एक्सीलेंस अवार्ड मिला है। ऑब्जर्वर पीस फाउण्डेशन वाराणसी द्वारा वर्ष 2022 के लिए ऑब्जर्वर अवार्ड की घोषणा की गई है। इसमें शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए ज्योति को सम्मानित किया गया। ज्योति समाजशास्त्र में विवि पदक और स्वर्ण पदक से भी सम्मानित हो चुकी हैं। समाजशास्त्र से ही

ज्योति भारद्वाज

अरविन्द सिंह

पीएचडी कर चुके डॉ. अरविंद सिंह को भी ऑब्जर्वर यंग एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया है। डॉ अरविंद सिंह ने प्रो दिवाकर सिंह राजपूत के निर्देशन में पीएचडी उपाधि प्राप्त की है।

विवि में राष्ट्रीय कार्यशाला कल से 11 अक्टूबर तक चलेगी

- विवि में चरित्र निर्माण पर होगी राष्ट्रीय कार्यशाला
- शोध पत्रों की प्रस्तुति के साथ पोस्टर प्रतियोगिता भी होगी

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी 7 से 11 अक्टूबर तक विवि के स्वर्ण जयंती सभागार में होगी। संगोष्ठी में देश भर के शिक्षक, शोधार्थी एवं शिक्षा अभ्यासकर्मी सहभागिता करेंगे। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने बताया कि इस कार्यशाला में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर मंथन होगा जिसमें देश के कई विषय विशेषज्ञ विभिन्न आयामों पर व्याख्यान देंगे। आयोजन सचिव डा. शशिकुमार सिंह ने बताया कि संगोष्ठी में सहभागिता के लिए प्रतिभागियों के पंजीकरण की अंतिम तिथि 6 अक्टूबर 2022 तक है। इच्छुक प्रतिभागी विवि की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर दिए गए लिंक पर ऑनलाइन पंजीकरण करा सकते हैं।

शोध पत्र होंगे प्रस्तुत, पोस्टर प्रतियोगिता भी होगी: संगोष्ठी के उपविषयों पर आधारित शोध-पत्र भी प्रस्तुत किए जाएंगे। इस माध्यम से नई शिक्षा नीति के आलोक में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के संदर्भ में आने वाली चुनौतियों पर चर्चा होगी व पाठ्यक्रमों के निर्माण एवं गुणवत्तापूर्ण संचालन के लिए सुझाव पत्र भी तैयार होगा। दिनांक 10 एवं 11 अक्टूबर को भारतीय भाषा में शिक्षण-अधिगम एवं पाठ्य सामग्री निर्माण पर व्याख्यान एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया है। कार्यशाला के विभिन्न उपविषयों पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रतिभागियों के लिए योग अभ्यास सत्र एवं संवाद सत्र भी रखा गया है। इस पंचदिवसीय आयोजन में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे, जिसके बाद विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाएगा।

जीवन में सिद्धांत एवं व्यवहार का समन्वय आवश्यक: डॉ. कोठारी

विवि राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी में तीसरे दिन परिचर्चा एवं शोध पत्रों का वाचन

जागरण न्यूज, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी के तृतीय दिवस का प्रथम सत्र परिचर्चा सत्र के साथ आरम्भ हुआ। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता, डॉ अतुलभाई कोठारी और अशोक कड़ेल प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।परिचर्चा सत्र में चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय हरियाणा से डॉ.धर्मवीर, डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालयसे डॉ. संजय शर्मा तथा शशि कुमार सिंह ने अपने संस्थानों में चरित्र निर्माण हेतु किए जा रहे अनेक प्रयासों की प्रस्तुति दी। इसमें नशामुक्ति, गुणवत्तापूर्ण शोध के साथ साहित्यिक चोरी से मुक्ति तथा कैंपस टू कम्युनिटी कनेक्ट प्रोग्राम के साथ चरित्र निर्माण के अनेक प्रयासों की चर्चा की गई। सत्र की अध्यक्षता कर रही अटल बिहारी वाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय भोपाल के इंदौर अध्ययन केंद्र की संयोजक श्रीमति शोभा पैठणकर ने कहा कि इन प्रयासों के साथ अन्य नए नवाचार की भी आवश्यकता है। कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि व्यक्ति अपने ज्ञान एवं मानवीय चेतना के आधार पर अपने व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करता है। कार्यशाला के नवमें सत्र में देश भर से आए हुए अनेक प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के संबंध में स्वयं के अनुभव साझा किए। अतुल कोठारी ने शिक्षण अधिगम में नवाचार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन तथा चरित्र निर्माण पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। उन्होंने अनेक उदाहरणों से यह समझाने का प्रयास किया कि भारतीय चिंतन परंपरा व आत्मावलोकन ही चरित्र निर्माण के मूल में है। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और चरित्र निर्माण और भारतीय परंपरा पर केंद्रित पोस्टर का निर्माण किया। प्रतियोगिता में अभिषेक उपाध्याय प्रथम, कृष्णा गौड़ द्वितीय और आर्या जैन तथा स्वीटी सोनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजयी प्रतिभागियों को मंचासीन अतिथियों द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

'मनोमय कोष एक सेतु का कार्य करता है, मूल मन है'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के योग शिक्षा विभाग द्वारा विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर योग द्वारा मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. रामकुमार स्वर्णकार थे।

उन्होंने कहा कि मनुष्य का शरीर पंच तत्वों पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से मिलकर बना है। इसमें पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पांच प्राण का वास है। ये पंचकोषों का संवर्धन करते हैं। पंच कोष-अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष व आनंद मय कोष हमारी परंपरा एवं संस्कृति में एक उत्तम चरित्र और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। इनमें मनोमय कोष के पहले दो और बाद में दो कोष आते हैं। अर्थ यह है कि मनोमय कोष एक सेतु का कार्य करता है। इस मनोमय कोष का मूल मन है। जबलपुर के प्रग्रत शैक्षणिक अध्ययन संस्थान के प्राध्यापक डॉ. रामकुमार स्वर्णकार ने कहा कि योग में शरीर, मन एवं आत्मा के संबध को सर्वोपरि माना है, क्योंकि शरीर और मन के माध्यम से ही आत्म ज्ञान संभव है यही योग का परम उद्देश्य है।

योगविभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर गिरि ने योग को आधुनिक तनावपूर्ण जीवन में योग को एक जीवन शैली के रूप में अपनाने की चर्चा करते हुए योग के महत्व को समझाया। इस अवसर पर सहायक प्राध्यापक डॉ. अरुण साव ने उपनिषदों में वर्णित पंचकोषों द्वारा स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीर, कर्म सिद्धांत व तनावजनित समस्याओं पर प्रकाश डाला। प्रो.अस्मिता गजभिए ने कहा कि हम अपने व्यवहार से छोटे स्तर पर भी दूसरे के जीवन में बड़े परिवर्तन ला सकते हैं। ईश्वरीय प्रतिभाओं को समाज में बांटने से मानसिक स्वास्थ्य विकसित होता है ।

'गांधी देश को अंग्रेजी से मुक्त करना चाहते थे'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और भारतीय भाषा समिति शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के तत्वावधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के चौथे दिन मुख्य वक्ता प्रो. अंबिका दत्त शर्मा ने कहा कि गांधी स्वतंत्र भारत को अंग्रेजी से मुक्त करना चाहते थे और हिंदी या भारतीय भाषाओं को भारत में चाहते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय भाषा नीति या निरापद भाषा नीति का दावा करती है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में भाषा के नाम पर देश का आत्मविभाजन हुआ। प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि लोक साहित्य में व्याप्त ज्ञान को पाठ्यक्रम में ग्रहण किया जाना चाहिए। द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. निरंजन सहाय ने कहा कि भारत में अनेक भाषाएं प्रेमपूर्वक सामंजस्य के साथ रहती रहीं। सरहपा की मातृभाषा उडिया या बांग्ला थी। उन्होंमे मगध के क्षेत्र में कार्य किया और तत्पश्चात वे कर्नाटक चले गए। उन्होंने बांग्ला, मैथिली, कन्नड़ में साहित्य रचा। इसमें एकात्मकता स्पष्ट होती है। प्रो. निरंजन सहाय ने कहा कि भाषा कभी बिगड़ती नहीं है। बदलती है। उसका स्वरूप बदलता है। इससे उसके मानक भी बदलते हैं।

चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व के समग्र विकास पर शुरू हुआ मंथन और विमर्श

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का उदघाटन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में हुआ। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी के सारस्वत सान्निध्य में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुलभाई कोठारी सारस्वत वक्ता के रूप उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति अध्यक्षता प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। समारोह में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलपति प्रो.कपिलदेव मिश्रा, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली से प्रो.चांद किरण सलूजा एवं पूर्णिया विश्वविद्यालय, बिहार के कुलपति प्रो. राजनाथ यादव की सारस्वत उपस्थिति रही। साथ ही स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अजय तिवारी, मप्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के अध्यक्ष अशोक कडेल, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा भी मंचासीन थे। ज्ञान की देवी सरस्वती एवं डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ संगोष्ठी का शुभारम्भ हुआ।

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि यह भारत के निर्माण की कार्यशाला है जिसका निश्चित लक्ष्य है। डॉ. शशिकुमार सिंह ने पांच दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा और सत्रों का संक्षिप्त विवरण दिया। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कार्यशाला के विषय को महत्वपूर्ण बताया। डिजिटल युग में भारतीय बोध के साथ व्यक्तिव निर्माण करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यक्तित्व के समग्र विकास और चरित्र निर्माण के विषय में उल्लिखित बिन्दुओं पर चर्चा की। डॉ. अतुल भाई कोठारी ने कहा कि भारत में व्यक्तित्व, चरित्र के आधार पर नापा जाता है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण, नैतिक मूल्यों का ह्रास, हत्या आदि सभी समस्याओं का मूल कारण चरित्र से संबंधित है। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज के समय में विद्यार्थियों में श्रेष्ठ गुणों का समावेश होना चाहिए। प्रो. कपिल देव मिश्रा ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने विद्यार्थियों के एक हाथ में ज्ञान और कौशल को रखा है। वहीं, दूसरे हाथ में चरित्र और आचरण को। प्रो. राजनाथ यादव ने भारत में शिक्षा नीतियों का क्रमशः इतिहास बताते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विविध आयामों को बताया। अपराह्न सत्र में प्रो.चांद किरण सलूजा ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रथम अध्याय के अंत में स्पष्ट है कि बच्चे को शिक्षक एवं अभिवावक मिलकर उसकी संवेदनशीलता के साथ पहचानें और फिर उसके विकास के बारे में सोचें। मनोहर भंडारी ने अपने अन्नमयकोष विषय पर बोलते हुए कहा कि अन्न से उत्पन्न, अन्न के आधार एवं अन्न से पुष्ट को अन्नमय कोष कहते हैं। संगोष्ठी के विभिन्न उपविषयों पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है जा रहा है। प्रतिभागियों के लिए योग अभ्यास सत्र एवं संवाद सत्र भी रखा गया है।

प्रवेश संवाद

सागर

चरित्र निर्माण में सात्विक आहार एवं सत्य आचरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका : प्रो बिहारी लाल शर्मा

प्रवेश संवाद ✺ सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन प्रथम सत्र चरित्र निर्माण गीत निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें... के साथ आरम्भ हुआ। इस सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. विहारी लाल शर्मा थे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ अतुल भाई कोठारी ने की। मुख्य वक्ता लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो. विहारी लाल शर्मा ने अपने वक्तव्य में पंचकोश की आध्यात्मिक दृष्टि पर बात की। उन्होंने मानव के चरित्र निर्माण हेतु धर्म पर बल देने की बात की और साथ ही भारतीय शिक्षा में पाश्चात्य प्रभाव के कारण उत्पन्न दोषों को रेखांकित करते हुए भारतीय सनातन परंपरा के मुख्य बिंदुओं को भूल जाने की प्रवृत्ति की आलोचना की साथ ही 1835 ई. के पश्चात की आधुनिक शिक्षा नीति के नाम पर अपने आत्मगौरव को भुलाकर पश्चात्य चिंतन की ओर आकृष्ट होने के दुष्परिणामों को भी उन्होंने अपने चर्चा में शामिल किया। उन्होंने कहा कि किसी भी उत्तम राष्ट्र का निर्माण वहां के उत्तम चरित्र वाले व्यक्तियों से होता है। आज हम साक्षर तो हो रहें हैं परंतु शिक्षित नहीं हो रहें हैं। यह अपने आत्मगौरव को भूलने का परिणाम है।

मन पर नियंत्रण जीवन में उचित मार्ग प्रशस्त करता है : प्रो. सलूजा

मुख्य वक्ता के रूप में द्वितीय तकनीकी सत्र में संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान नई दिल्ली के प्रो. चांद किरण सलूजा ने अपना वक्तव्य मनोमयकोश पर दिया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. गणेश शंकर गिरी ने की। प्रो. सलूजा ने मनोमयकोश के संबंध में नई शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने मनोमयकोश के सैद्धांतिक और व्यवहारिक पक्षों पर चर्चा करते हुए कहा कि मन पर नियंत्रण के द्वारा हम अपने जीवन को उचित मार्ग की ओर अग्रसर कर सकते हैं। साथ ही इसके द्वारा व्यक्तित्व का समग्र विकास हो सकता है। वहीं तृतीय सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. मनोहर भंडारी ने अपना वक्तव्य दिया। डॉ. भंडारी ने कहा कि चिकित्सा शिक्षा में अवलोकन और मनोविज्ञान की शिक्षा आवश्यक है लेकिन हमारे देश का दुर्भाग्य है कि चिकित्सा शिक्षा में आज भी मनोविज्ञान की शिक्षा नही दी जाती है। यही कारण है कि मानव जीवन में पंचकोश अत्यंत महत्वपूर्ण है।

लोकतांत्रिकता शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता: अतुल कोठारी

चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता डॉ अतुलभाई कोठारी ने आनंदमय कोश की अवधारणा को व्याख्यायित किया। अध्यक्षता विवि की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने की। उन्होंने कहा कि आनंदमय कोश हमें समग्रता की ओर ले जाता है। पूरी पंचकोश की प्रक्रिया स्वयं को पहचानने की प्रक्रिया है। आम तौर पर इस पर चर्चा नहीं होती लेकिन यह अपने आप में एक विज्ञान है। उन्होंने कहा कि मनुष्य के भीतर इतनी क्षमता है कि वह हर समस्या का समाधान ढूंढ सकता है लेकिन कई बार वह अपनी इस क्षमता को नहीं पहचान पाता। इसलिये व्यक्ति को सबसे पहले स्वयं को पहचानने की आवश्यकता है। अध्यक्षता करते हुए विवि की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मन को व्यवस्थित रखने में और दैनिक चुनौतियां का सामना करने में ओमकार की ध्वनि सहायक होती है। श्वसन क्रिया को ठीक रखने में भी यह सहायक होता है।

पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का समापन

जागरण न्यूज, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय भारतीय भाषा समिति शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतीय भाषा में शिक्षण अधिगम एवं पाठ्य सामाग्री निर्माण पर शोध संगोष्ठी में समापन वक्तव्य देते हुए मुख्य अतिथि प्रो. कुमार रत्नम ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में विश्व में सबसे बड़ा सैंपल साइज लिया गया। इतिहास, संस्कृति और संस्कारों का उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समग्रता को स्पष्ट करता है। अध्यक्षीय वक्तव्य में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पहले इस कार्यशाला की संकल्पना तीन दिवसीय की गई थी। सभी सत्र पूर्ण संख्या में सफलता पूर्वक संपन्न हुए। भारतीय भाषा समिति के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. राकेश सिंह ने कहा कि भारतीय भाषा समिति भारत की तमाम भाषाओं पर कार्य कर रही है जिसमें 235 भाषों पर कार्य आरंभ हो चुका है। इस अवसर पर विवि के कुलसचिव संतोष सोहगौरा, कुलानुशासक प्रो. चंदा बेन भी मंचासीन थे। व्याख्यान सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. निरंजन सहाय ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत में पांच परिवारों की भाषाएं बोली और बरती जाती है। ऐसा यह इकलौता देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार 211 भाषाएं हैं। भारत में व्यवहार भाषा की समस्या कभी नहीं रही।

विवि के महर्षि पतंजलि भवन में मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यशाला का आयोजन किया

शरीर और मन के माध्यम से ही आत्मज्ञान संभव : प्रो. स्वर्णकार

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर डा. हरीसिंह गौर विवि के योग शिक्षा विभाग द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ● नवदुनिया

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर डा. हरीसिंह गौर विवि के योग शिक्षा विभाग द्वारा विवि के महर्षि पतंजलि भवन में मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। डा. रामकुमार स्वर्णकार के मुख्यातिथ्य व अतिथि प्रो. अस्मिता गजभिए एवं योगविभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर की अध्यक्षता में मां सरस्वती एवं डा. हरीसिंह गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

मुख्य अतिथि प्रो. राम कुमार स्वर्णकार ने कहा कि मनुष्य का शरीर पांच महाभूत- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से मिलकर बना है। इसमें पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पांच प्राण का वास है। ये पंचकोषों का संवर्धन करते हैं। पंच कोष- अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष एवं आनंद मय कोष हमारी परंपरा एवं संस्कृति में एक उत्तम चरित्र और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। इनमें मनोमय कोष के पहले दो और बाद में दो कोष आते हैं। उन्होंने कहा कि योग में शरीर, मन एवं आत्मा के संबध को सर्वोपरि माना है, क्योंकि शरीर और मन के माध्यम से ही आत्म ज्ञान संभव है। यही योग का परम उद्देश्य है। एक के प्रभावित होने पर दूसरे पर असर दिखाई देता है।

योगविभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर गिरि ने योग को आधुनिक तनावपूर्ण जीवन में योग को एक जीवन शैली के रूप में अपनाने की चर्चा करते हुए योग के महत्व को समझाया। उन्होंने विस्तार से भारतीय संस्कृति में योग परंपरा एव इसके आधुनिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति योग में साधना, सत्संग एवं सेवा द्वारा चेतना को विकसित कर पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त कर आन्नदानुभुति कर सकता है। उन्होंने योग द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न प्रकार के योगाभ्यास एवं चित्त शुद्धि के उपाय बताए। इस अवसर पर सहायक प्राध्यापक डा. अरूण साव ने उपनिषदों में वर्णित पंचकोषों द्वारा स्थल, सूक्ष्म एवं कारण शरीर, कर्म सिद्धांत एवं तनावजनित समस्याओं पर प्रकाश डाला। डा. साव ने उपनिषदों के साररूप श्रीमद् भगवद् गीता में वर्णित सात्विक राजसिक एवं तामसिक गुणों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावों की चर्चा की। कार्यशाला में प्रो. अस्मिता गजभिए ने बतौर सारस्वत अतिथि कहा कि हम अपने व्यवहार से छोटे स्तर पर भी दूसरे के जीवन में बड़े परिवर्तन ला सकते हैं। ईश्वरीय प्रतिभाओं को समाज में बांटने से मानसिक स्वास्थ्य विकसित होता है। विभागीय छात्र-छात्राओं ने समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए योगाभ्यास, प्रार्थनाएं, कविता एवं भजन प्रस्तुत किए।

हमारा विश्वविद्यालय आदर्श ग्राम प्रारूप की दिशा में अग्रणी हो : प्रो. नीलिमा गुप्ता

बैठक में उन्नत भारत अभियान को लेकर दिशा-निर्देश देती हुईं डा. हरी सिंह गौर केंद्रीय विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। भारत सरकार की महत्वपूर्ण योजना उन्नत भारत अभियान गांवों के चहुंमुखी विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है। इसके लिए शैक्षणिक संस्थानों द्वारा गोद लिए गांवों में विभिन्न कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर इस दिशा में आदर्श गांव की परिकल्पना को साकार रूप देने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है।

यह बात उन्नत भारत अभियान की एक बैठक की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कही। उन्होंने कहा कि हम अपनी विशेषज्ञता के आधार पर गांवों में कार्यक्रमों के माध्यम से ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करें, जो प्रदेश और देश के लिए रोल माडल बनें। उन्नत भारत अभियान के नोडल अधिकारी प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि योजना के मुख्य उद्देश्यों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। मानव विकास और आर्थिक विकास। इसके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, स्वच्छता, विधिक जागरूकता, जैविक कृषि, कौशल उन्नयन और पर्यावरण संरक्षण जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से गांव और देश के लिए कुछ अच्छा करना है।

प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और आगामी कार्ययोजनाओं पर प्रकाश डाला। देशज ज्ञान और स्थानीय प्रतिभाओं के संपोषण की बात भी की। कार्यक्रम में प्रो. संजय जैन, प्रो. उमेश पाटिल, प्रो. श्वेता यादव, डा. रश्मि जैन, डा. किरण माहेश्वरी और श्री गिरि ने अपने विचार रखे।

कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा कि शीघ्र ही गांवों को आत्म निर्भर बनाने के लिए बहु-आयामी प्रोजेक्ट पर काम करने के लिए हमको समन्वित रूप से आगे आना होगा। आभार प्रो दिवाकर सिंह राजपूत ने माना।

यूपीएससी के भू वैज्ञानिक की मुख्य परीक्षा में 31 विद्यार्थी हुए सफल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के व्यावहारिक भूगर्भशास्त्र विभाग के विद्यार्थियों ने यूपीएससी की ग्रुप ए और ग्रुप बी सर्विस के लिए आयोजित की जाने वाली मुख्य परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। यूपीएससी भूवैज्ञानिक ग्रुप ए की मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण करने वालो में विभाग के अब्दुल शमद खान, वरुण शास्त्री, आशीष राय, ऋषिता जैन, भगवती पटेल, पूर्वा पांडे, राजा अहिरवार, अंकिता दुबे, संगम समल ,महिमा अवस्थी, आतिश कुमार साहू, मधुस्मिता सेठी, कोकिल राभा, संदीप बर्मन, महेंद्र चौहान, प्रियव्रत राउल, प्रफुल्ल सोनवाल, अमित कुमार शामिल हैं।

इसी प्रकार यूपीएससी के भूवैज्ञानिक की ग्रुप बी की मुख्य परीक्षा में अब्दुल शमद खान, एवेज आलम, अभिषेक तिवारी, सौरभ तिवारी, सुनील के पांडे, अखिलेश अग्रवाल, गरिमा सिंह, रितु पटेल, संदीप बर्मन, महेंद्र चौहान, आशीष राय, गोमुख, भगवती पटेल सफल हुए हैं। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विभाग पहुंचकर सभी सफल छात्रों को शुभकामनाएं दी।

कार्यशाला • डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के योग शिक्षा विभाग में योग एवं आयुर्वेद पर कार्यशाला का आयोजन

योग सिर्फ तन का नहीं मन का विषय भी हैः डॉ. सिंघई

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विवि सागर के योग शिक्षा विभाग द्वारा योग एवं आयुर्वेद पर कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय के पतंजलि भवन के योगसाधना कक्ष में किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर ने अध्यक्षता की। आयुर्वेदाचार्य डा. अनिल सिंघई मुख्य अतिथि एवं दीपक श्रीवास्तव विशेष अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे। मां सरस्वती एवं डॉ गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यशाला में वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. अनिल सिघई ने कहा कि योग तन का विषय नहीं मन का विषय है। आयुर्वेद और योग के समन्वित दृष्टिकोण एवं व्यवहार से ही व्यक्तित्व विकास एवं निर्माण संभव हो सकता है। जैसे योग में अष्टांग योग की व्याख्या है वैसे ही आयुर्वेद से अष्टांग चिकित्सा की चर्चा है, योग एवं आयुर्वेद दोनों में पंचप्राणों, षटकर्मों और पंचकर्मों की व्याख्या है। डॉ. सिघई ने कहा कि शरीर वात पित्त और कफ का संगठन है, जिसमें वात अर्थात वायु, कफ और पित्त के कार्यों का संचालन करता है। वायु ही संवेगों का दिमाग से प्रकर्षण संवहन कर सारे शरीर को सक्रिय बनाती है। जो वायु को नियंत्रित कर लेता है। वह चंचल चपल मन को साध सकता है। इसलिए योग की जीवन शैली समग्र व्यक्तित्व विकास की आधारशिला है। योग शिक्षा के विभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर गिरी ने कहा कि स्वस्थवृत्त सद्वृत्त, ऋतु चर्या, आहारचर्या, दिनचर्या, रात्रिचर्या, शल्य चिकित्सा, कायचिकित्सा, पंचकर्म से आयुर्वेद का परिचय होता है तो जीवन शैली योग का परिचय है। उन्होंने योग एवं आयुर्वेद का समावेश कर आयुर्वेद के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत चर्चा की। डॉ गिरी ने आधुनिक जीवन शैली के बिगडते स्वरूप में स्वस्थवृत एवं संतुलित आहार की अनिवार्यता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि कार्यशाला के तहत योग विभाग द्वारा 18 से 22 अक्टूबर तक प्रातः 6.00 से 8.30 बजे तक योग एवं आयुर्वेद से जुडे विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन दिया जाएगा। इसमें कोई भी भाग ले सकता है।

विशेष अतिथि दीपक श्रीवास्तव ने कहा कि योग एवं आयुर्वेद विश्व को भारत की अद्वितीय देन है। दोनों ही विद्याएँ तत्त्वदृष्टा ऋषि मुनियों के अनुभवजन्य ज्ञान का प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक विज्ञान हैं। आज की शिक्षा मूल्यपरक शिक्षा हो गई है। जिसमें शिक्षा परिस्थियों से योग्यता प्राप्त करने की एक पद्धति-मात्र बनकर रह गई है जो केवल भौतिकवाद की ओर ले जा रही है। इसके अन्धानुकरण के कारण ही योग की परम्परा लुप्त होती जा रही है। आधुनिक शिक्षा के साथ साथ प्राचीन शिक्षण पद्धति, आयुर्वेद एवं योग को अपनाने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों पूजा, मयंक, सोनाली, विकास और सुरभि ने योगाभ्यास का प्रदर्शन किया। गणेश वंदना पर प्रियांषी सिंह ने नृत्य पेश किया। संचालन डॉ.नितिन कोरपाल ने तथा आभार डॉ. अरूण साव ने माना। इस अवसर पर डॉ अवनीश सिंघई, सेना अधिकारी रवि कुमार, डॉ. ब्रजेश ठाकुर, प्रज्ञा साव, चेतना सहित विद्यार्थी उपस्थित थे।

यूटीडी सागर ने टाइम्स कॉलेज दमोह को हराकर जीता फाइनल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विवि के शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित अंतर महाविद्यालय खो-खो महिला प्रतियोगिता में मंगलवार को पहला सेमीफाइनल मैच बीटीआईई और यूटीडी सागर के बीच खेला गया, जिसमे यूटीडी की टीम ने 11-03 से जीत अर्जित कर फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मैच टाइम्स कॉलेज दमोह व यूटीडी के मध्य खेला गया, जिसमें यूटीडी की टीम ने 18-10 जीत अर्जित की।

मैच के निर्णायक धर्मेंद्र वर्मा व कुलदीप रहे। स्कोरर अनवर खान थे।

निर्णय • केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस पर 15 जनवरी 2023 को होगा आयोजन

विवि के मेगा एल्युमिनी सम्मेलन में देश-दुनिया से पूर्व छात्र जुटेंगे, पंजीयन के लिए 4 रीजनल सेंटर भी बनेंगे

भास्कर संवाददाता | सागर

अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण कर चुके डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों की एक लंबी सूची है जो देश और दुनिया के आर्थिक, राजनीतिक, साहित्यिक, कला और सामजिक जीवन के उच्च शिखरों पर पहुंचे हैं।

उन्होंने अपनी जन्मभूमि और ज्ञान साधना के तपोवन का नाम रोशन किया है। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय के एल्युमिनी एसोसिएशन के माध्यम से ऐसे सभी पुरा छात्रों के लिए केंद्रीय विवि स्थापना दिवस यानी 15 जनवरी 2023 को एक मेगा एल्युमिनी सम्मलेन करने की योजना बनाई है। जिसमें देश-विदेश से बड़ी संख्या में पुरा छात्र शिरकत करेंगे। विवि प्रशासन द्वारा कुछ दिनों से इसके लिए प्रयास शुरू कर दिए गए हैं। इस संबंध में एसोसिएशन की कार्यकारी समिति की एक बैठक अगले माह होगी। जिसमें मेगा सम्मलेन की पूरी रूपरेखा तैयार की जाएगी।

एसोसिएशन के नवनियुक्त सचिव प्रो. जीएल पुणतांबेकर ने बताया कोरोनाकाल में एसोसिएशन की प्रगति बाधित हुई परंतु अब इसे गति प्रदान करने के लिए नए सिरे से पंजीयन फॉर्म बनाया गया है। जिसमें सभी पुरा छात्र ऑनलाइन माध्यम से भी पंजीयन कर पंजीयन शुल्क जमा कर सकते हैं। विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर भी एसोसिएशन की गतिविधियों को नए सिरे से उन्नत किया जा रहा है। एसोसिएशन के चुनाव भी कराने के लिए कार्यकारी समिति की आगामी बैठक में कार्यक्रम जारी किया जाना प्रस्तावित है। एसोसिएशन के वर्तमान अध्यक्ष प्रो. डीके मुखारया और विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शहर के सभी गणमान्य और पुरा छात्रों से अपील की है कि वे स्वयं एसोसिएशन से जुड़कर अधिक से अधिक संख्या में अपने बैच के पुरा छात्रों के बारे में जानकारी एसोसिएशन के साथ साझा करें। जिससे एसोसिएशन उनसे आगामी मेगा सम्मलेन में शिरकत करने के लिए संपर्क कर सके।

एसोसिएशन के विस्तार के लिए ग्वालियर, नागपुर, बनारस और दिल्ली में रीजनल सेंटर बनाने के लिए भी इन स्थानों पर विश्वविद्यालय के पुरा छात्रों से संपर्क कर उन्हें पंजीयन फॉर्म दिए गए हैं। ग्वालियर से डॉ. राजेंद्र खटीक, बनारस से प्रो. आशीष वाजपेयी, नागपुर से प्रो. मृणालिनी फड़नवीस, प्रयागराज से प्रो. तनुज नंदन और नई दिल्ली से कैप्टन दुबे ने शीघ्र ही रीजनल सेंटर प्रारंभ होने की संभावना जताई है। एसोसिएशन के सचिव प्रो. पुणतांबेकर ने बताया सभी पुरा छात्र साथ में दी गई लिंक या क्यूआर कोड पर अपने पंजीयन कर सकते हैं। एसोसिएशन प्राप्त रजिस्ट्रेशन फॉर्म पर तत्काल प्रमाण पत्र और रसीद जारी करेगी। सभी पंजीकृत सदस्यों को एसोसिएशन की सभी गतिविधियों की जानकारी उनके पंजीकृत मेल के माध्यम से दी जाएगी। किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए मोबाइल नंबर 9425425964 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

डा. गौर विश्वविद्यालय में कृष्णवट, इसके पत्ते होते हैं कटोरी और चम्मचनुमा

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। सागर स्थित डा. हरी सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के बाटनीकल गार्डन में एक कृष्णवट वृक्ष लगा है। ऐसा माना जाता है कि कृष्णवट धरती का वह चमत्कारिक वृक्ष है जो भगवान श्रीकृष्ण के बाल्यकाल में उनका पवित्र स्पर्श पाकर अलौकिक हो गया था। कान्हा ने मां यशोदा से छिपाकर एक बार इसके पत्तों में माखन रखा था, उस के बाद से इसका पत्ता-पत्ता भगवान के लिए समर्पित हो गया। आज भी कृष्णवट के पत्ते कटोरी-चम्मच का आकार लेकर उगते हैं। विश्वविद्यालय के वानस्पतिक उद्यान में लगे इस वृक्ष का वानस्पतिक नाम भी भगवान कृष्ण के नाम पर फाइकस कृष्णाई है। विभाग के अधिकारियों के अनुसार विवि के वानस्पतिक बगीचे में करीब 6 दशक से अधिक समय से यह मौजूद है।

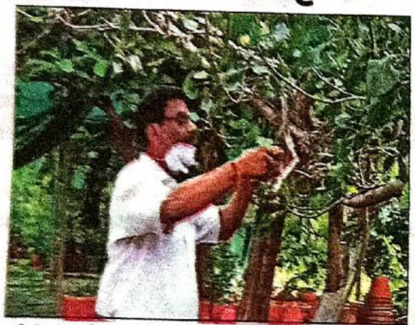

गार्डन में लगे वट की जानकारी देते तकनीकी सहायक शरदकांत सोनी। ● नवदुनिया

इसे किसने कब कहां से लाकर लगाया गया था, इसकी पुख्ता जानकारी नहीं है। यह वृक्ष करीब 15 साल से करा सा बढ़ पाया है। यह काफी धीमीगति से बढ़ रहा है। विभाग ने इसको संरक्षित करने तार की फेंसिंग कराई है। इस वृक्ष के पत्ते कटोरीनुमा व पीछे की तरफ चम्मचनुमा होते हैं। धार्मिक मान्यता है कि माखन चोरी की लीलाओं के दौरान माता यशोदा की डांट से बचने के लिए बाल कृष्ण ने इसी वटवृक्ष के पत्तों में माखन रखकर उन्हें लपेट दिया था। जिसके बाद से इसके पत्ते भगवान के स्पर्श से कटोरी-चम्मच की तरह ही उगते हैं। माखन कटोरी वटवृक्ष नाम से भी पहचाना जाता है फाइकस कृष्णाई वृक्ष को देश के कई हिस्सों में माखन-कटोरी वटवृक्ष भी कहा जाता है। इसको लेकर अलग-अलग किवदंतियां व धार्मिक मान्यताएं बताई जाती हैं।

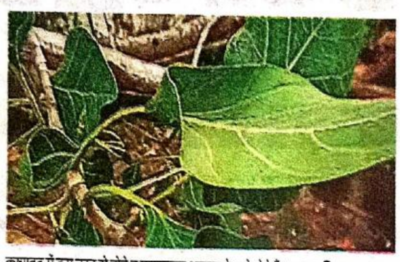

कृष्णवट में इस तरह से दोने व चम्मचनुमा आकार के पत्ते होते हैं। ● नवदुनिया

बगीचे में तीन तरह के बरगद मौजूदः विवि के बाटनीकल गार्डन में हजारों प्रजाति के पेड़-पौधे संरक्षित हैं। सबसे खास बात यह कृष्णाई फाइकस (कृष्णवट) के साथ-साथ दो अन्य प्रजाति के बरगद भी मौजूद हैं। इनमें एक

- **छह दशक से संरक्षित है कृष्णवट, वानस्पतिक नाम भी कृष्णाई फाइकस**
- **वानस्पतिक बगीचे में करीब छह दशक से अधिक समय से मौजूद है पौधा**

सामान्यतः पाया जाने वाला बरगद तो दूसरा बरगद ऐसा है जिसकी जड़े ऊपर के तनों से नीचे की तरफ बढ़ती हैं। एक ही स्थान पर बरगद की तीनों प्रजातियां मौजूदगी का यह इकलौता स्थान है। डा. हरी सिंह गौर केंद्रीय विवि के वनस्पति विभाग के तकनीकी सहायक शरदकांत सोनी का कहना है कि दुर्लभ प्रजाति का कृष्ण वट गार्डन में करीब पचास साल से अधिक समय से मौजूद है। इसका हिंदी नाम माखन-दोना या माखन कटोरी भी प्रचलित है। वानस्पतिक नाम फाइकस कृष्णाई है। इसे कृष्ण वट नाम इसलिए दिया गया क्योंकि मान्यता है कि बचपन में कृष्ण ने मक्खन खाने में इस वृक्ष के पत्तों का उपयोग किया था। पौराणिक कथाओं में उल्लेख है कि कृष्णजी इस वृक्ष पर बैठकर माखन खाया करते थे। यह वृक्ष 12 महीने हरा भरा रहता है। इससे आसपास भूजल स्तर की विपुलता के संकेत मिलते हैं, मध्यप्रदेश में सागर विश्वविद्यालय में ही यह इकलौता वृक्ष है। इस वृक्ष से नए पौधे तैयार करना काफी जटिल प्रक्रिया होती है। काफी प्रयास के बावजूद दूसरा पेड़ नहीं बन पाया। श्रीमद्‌ भागवत आचार्य पं. देवशरण शास्त्री के मुताबिक कृष्णवट काफी पवित्र वृक्ष है। नंदगाव व बृज में भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं से सीधा संबंध है। माता यशोदा ने कान्हा को मक्खन-दही, मिश्री इन्हीं में खिलाई थी। यह दुर्लभ व पवित्र वृक्ष है सागर सहित, वृंदावन में आज भी मौजूद है।

कर्मचारी ही विवि की वास्तविक कार्य ऊर्जा हैं. प्रो. नीलिमा गुप्ता

जागरण न्यूज, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के द्वारा सीधा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम ही शुरूआत विवि के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर एवं वाकदेवी सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर की गई। कार्यक्रम में कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने सीधा संवाद कार्यक्रम की आवश्यकता एवं इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि सक्षम प्राधिकारी के साथ अनौपचारिक संवाद एक नई प्रथा की शुरुआत है। इस मंच के माध्यम से कर्मचारी एवं अधिकारी अपने मन के उद्गार से सीधे कुलपति को अवगत करा सकते है। संवाद कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वित्ताधिकारी, परीक्षा नियंत्रक, पुस्तकालय प्रभारी, निदेशक शारीरिक शिक्षा विभाग आदि के साथ विभिन्न कर्मचारियों के द्वारा अपने-अपने प्रभार एवं सेक्शन की प्रगति एवं समस्याओं के विषय में अवगत कराया गया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय की वास्तविक ऊर्जा उसके कर्मचारी होते है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की प्रगति में रिक्त पड़े हुए पद सबसे बड़ी बाधा है। कार्य के अत्यधिक दबाव के कारण कर्मचारियों को तनाव से भी गुजरना पड़ता है जिसका असर उनकी कार्य कुशलता पर पड़ता है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के विकास के लिए अतिशीघ्र खाली पदों को भरा जायेगा। मृतकों के आश्रितों की नियुक्ति की प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया जा रहा है। पिछले वर्षों से कर्मचारियों की रुकी हुई क्रमोन्नति, समय वेतनमान आदि विसंगतियों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जायेगा। प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि सागर विश्वविद्यालय के कर्मचारी, अधिकारी और शिक्षक विश्वविद्यालय के विकास के प्रति समर्पित है। हमें एक परिवार की भांति एक प्रभार से दूसरे प्रभारए एक शाखा से दूसरी शाखा के बीच समन्वय और जवाबदेही के साथ कार्य सम्पादित करने की आवश्यकता है, ऐसा करके ही हम डॉ. गौर के सपनों को उत्कृष्ठता के आधार पर पूरा कर पाएंगे।

दैनिक भास्कर
सागर . बुं

आयोजन • अधिकारियों और कर्मचारियों से कुलपति ने किया सीधा संवाद

विश्वविद्यालय के खाली पदों को जल्द भरा जाएगा, अनुकंपा, पदोन्नति, क्रमोन्नति भी होगी : कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारियो एवं कर्मचारियों के साथ कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के द्वारा सीधा-संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम ही शुरूआत विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर एवं सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर की गई । स्वागत भाषण देते हुए कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने सीधा-संवाद कार्यक्रम की आवश्यकता एवं इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि सक्षम प्राधिकारी के साथ अनौपचारिक संवाद एक नई प्रथा की शुरुआत है। इस मंच के माध्यम से कर्मचारी एवं अधिकारी अपने मन के उद्गार सीधे कुलपति बता सकते है। संवाद कार्यक्रम में

विश्वविद्यालय के वित्ताधिकारी, परीक्षा नियंत्रक, पुस्तकालय प्रभारी, निदेशक शारीरिक शिक्षा विभाग आदि के साथ विभिन्न कर्मचारियों के द्वारा अपने-अपने प्रभार, सेक्शन की प्रगति एवं समस्याओं से अवगत कराया गया।

कार्यक्रम में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्वविद्यालय की वास्तविक ऊर्जा उसके कर्मचारी होते है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की प्रगति में रिक्त पड़े हुए पद सबसे बड़ी बाधा है. कार्य के अत्यधिक दबाव के कारण कर्मचारियों को तनाव से भी गुजरना पड़ता है जिसका असर उनकी कार्य-कुशलता पर पड़ता है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के विकास के लिए अतिशीघ्र खाली पदों को भरा जायेगा. मृतकों के आश्रितों की नियुक्ति की प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया जा रहा है. पिछले वर्षों से कर्मचारियों की रुकी हुई क्रमोन्नति, समय वेतनमान आदि विसंगतियों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जायेगा।

प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि सागर विश्वविद्यालय के कर्मचारी, अधिकारी और शिक्षक विश्वविद्यालय के विकास के प्रति समर्पित है. हमें एक परिवार की भांति एक प्रभार से दूसरे प्रभार, एक शाखा से दूसरी शाखा के बीच समन्वय और जवाबदेही के साथ कार्य सम्पादित करने की आवश्यकता है, ऐसा करके ही हम डॉक्टर गौर के सपनों को उत्कृष्ठता के आधार पर पूरा कर पाएंगे. संचालन सह-पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. संजीव सर्राफ ने किया तथा सुश्री ए.लक्ष्मी ने आभार ज्ञापित किया।

योग, आयुर्वेद आत्मबल बढ़ाने और धैर्य धारण करने में सहायक: आयुर्वेदाचार्य

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. वस्तुतः आयुर्वेद योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा एक ही हैं, इनमें शामिल प्रक्रियाओं के आधार पर इनके भिन्न-भिन्न नामकरण हुए हैं। आयुर्वेदिक पंचकर्म वमन विरेचन बस्ति नस्य और रक्त मोक्षण ऐसी क्रियाएं हैं, जिनसे रोगों का और दोषों का पूर्ण शमन होता है। यह विचार आयुर्वेदाचार्य डॉ.नीरज जैन ने विश्वविद्यालय में हुए कार्यक्रम के दौरान कहे। उन्होंने कहा कि विरेचन में औषधि उपचार कराया जाता है तो मधु घृत आदि के माध्यम से बस्ति कर्म कराकर पित्त शमन कराते हैं। योग विभागाध्यक्ष प्रो.गणेष शंकर गिरी ने कहा कि ऐसी कार्यशालाओं का उद्देश्य जनमानस में इन विषयों के प्रति जागरूकता पैदा करना है ताकि मानव जीवन खुशहाल बने। कार्यक्रम में शिवानी राजपूत ने शुद्धि क्रियाओं, प्रियांशी ने प्राणायाम, अमन ने सूर्य नमस्कार, शुवेन्द्र ने

प्रज्ञा योग तथा आयुषी दीक्षित ने योगाभ्यास प्रस्तुत किए। मानसी मिश्रा ने शिव स्तुति के साथ नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बृजेश ठाकुर ने और आभार डॉ.नितिन कोरपाल ने माना।

स्वास्थ्य और स्वच्छता एक दूसरे के पूरक हैं : कुलपति

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के द्वारा केन्द्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के आव्हान पर राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान के अंतर्गत विश्वविद्यालय परिसर में मेरा विश्वविद्यालय मैं ही सवारूँ कार्यक्रम की शुरुआत कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता के द्वारा परिसर में सफाई करके की गई, कार्यक्रम के प्रारम्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ.संजय शर्मा ने इस अभियान के उद्देश्य एवं आवश्यकता के विषय में अवगत कराया, प्रो. नीलिमा गुप्ता ने राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों, स्काउट एवं गाइड के बच्चों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा स्वच्छता और स्वास्थ्य एक ही सिक्के के दो पहलू है स्वच्छता के बिना स्वास्थ्य की कल्पना करना बेमानी है, मेरा विश्वविद्यालय मैं ही सवारूँ एक भावनात्मक जुड़ाव है प्रत्येक स्वयंसेवक अपने आस–पास प्लास्टिक, कचरा इत्यादि एकत्रित करके परिवेश को साफ रखेगा।

विश्वविद्यालय के तीन विभागों को मिलेंगे नए भवन, कुलपति ने किया भूमिपूजन

सागर | डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के फ़ाइन आर्ट्स एवं परफॉर्मिंग आर्ट्स, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान तथा अपराधशास्त्र एवं न्यायिक विज्ञान विभाग के नवीन एकीकृत भवन निर्माण के लिए भूमिपूजन गुरुवार को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया। यह भवन नैनोटेक्नोलॉजी भवन के समीप बनेगा। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि नए भवनों के निर्माण से विश्वविद्यालय को और अधिक विस्तार मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए अधिक से अधिक सुविधाएं उपलब्ध हो पाएंगी। इस अवसर पर कुलसचिव संतोष सौहगौरा, अधिष्ठाता डॉ. ललित मोहन, विवि यंत्री राहुल गिरी गोस्वामी सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। सीपीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियन्ता सर्वेश तिवारी ने कहा कि भवन निर्धारित समय सीमा में बनकर तैयार हो जाएगा।

विश्वविद्यालय के तीन विभागों को मिलेंगे नए भवन

कुलपति ने किया भूमिपूजन कर रखी आधारशिला

जागरण न्यूज, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के फ़ाइन आर्ट्स एवं परफॉर्मिंग आर्ट्स, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान तथा अपराधशास्त्र एवं न्यायिक विज्ञान विभाग के नवीन एकीकृत भवन निर्माण के लिए गुरुवार को भूमि पूजन हुआ। यह भवन नैनोटेक्नोलॉजी भवन के समीप बनेगा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भूमिपूजन कर भवन की आधारशिला रखी। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि नए भवनों के निर्माण से विश्वविद्यालय को और अधिक विस्तार मिलेगा और विद्यार्थियों के लिए अधिक से अधिक सुविधाएं उपलब्ध हो पाएंगी। इस अवसर पर कुलसचिव संतोष सौहगौरा, अधिष्ठाता डॉ. ललित मोहन, विवि यंत्री राहुल गिरी गोस्वामी सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। सीपीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियन्ता सर्वेश तिवारी ने कहा कि निर्धारित समय सीमा में बनकर उपयोग के लिए तैयार होगा।

जीवन में नकारात्मकता अशांति का कारण : प्रो. गिरी

योग व आयुर्वेद से समग्र खुशहाली संभव : डॉ. राहुल

विवि के योग शिक्षा विभाग में 5 दिवसीय योग एवं आयुर्वेद की कार्यशाला का आयोजन

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के योग शिक्षा विभाग द्वारा आयुर्वेद दिवस के आयोजन के तीसरे दिन योग विभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर की अध्यक्षता एवं सागर के प्रमुख आयुर्वेदाचार्य डॉ. राहुल जैन के मुख्य आतिथ्य में हुआ। योग एवं आयुर्वेद द्वारा समग्र एवं स्थायी खुशहाली संभव है। मनुष्य की शारीरिक मानसिक सामाजिक आर्थिक चारित्रिक आध्यात्मिक संपन्नता ही खुशहाली का परिचय है। योग एवं आयुर्वेद का समन्वित आचरण समग्र रूप से स्थायी खुशहाली प्राप्त करने का माध्यम बन सकता है। उक्त विचार डॉ. राहुल जैन आयुर्वेदाचार्य ने योग शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला में व्यक्त किए। डॉ. जैन ने कहा कि सात्त्विक गुणों के विकास से शरीर मन और आत्मा में जो सकारात्मक उर्जा का संचार होता है। वह जीवन की खुशहाली सुनिश्चित करती है। विषमताओं में समत्व भाव का विकास इसी खुशहाली को प्राप्त करने के बाद मनुष्य को सुलभ होता है। जीवन में खुशहाली के महत्त्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है भारत सरकार आने वाले समय में एक लाख से अधिक वैलनेस सेंटर खोलने पर विचार कर रही है। ऐसे में योग एवं आयुर्वेद के विद्यार्थियों को अपने को तैयार करना होगा क्योंकि उन्हें इस क्षेत्र में सेवा के अवसर प्राप्त होंगे। जीवन में नकारात्मकता मानसिक अशांति का कारण स्वागत भाषण देते हुए योग विभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर गिरी ने कहा कि जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण, प्रदूषण तथा तनाव जनित दिनचार्य में विश्रांतिकारक योग एवं आयुर्वेद की भूमिका की वजह से इनको जीवनशैली का अंग बनाने हेतु सभी का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि में आधुनिक समय में विकारों के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा जीवन में नकारात्मकता से प्रभावित और जनित तनाव-मधुमेह, अवसाद, हृदय रोग और मानसिक अशांति का कारण बन रहा है और वैलनेस के महत्त्व को हमारे विश्वविद्यालय ने समझा है इसी कारण कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय में योग वैलनेस केन्द्र की स्थापना की है। शीघ्र ही प्रमाण पत्र एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ किए जा रहे हैं। विद्यार्थियों ने योगाभ्यास का प्रदर्शन किया। नरेन्द्र चौरसिया ने योग एवं आयुर्वेद आधारित कविता पाठ प्रस्तुत किया। संचालन सहायक प्राध्यापक डॉ. अरूण साव ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. ब्रजेश ठाकुर ने किया। इस अवसर पर डॉ.अवनीष सिंघई, सेना के अधिकारी रवि कुमार, प्रज्ञा साव, चेतना सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित थे।